Ajasra, ISSN: 2278-3741
UGC CARE Group 1 (Peer Reviewed Refereed Journal)
www.ajasra.in

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता का अध्ययन

Authored By

प्रो. बी.एल. जैन
शिक्षा विभागाध्यक्ष
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूँ

Published in

Ajasra,ISSN:2278-3741
Volume 13 Issue 4 April 2024 with Impact Factor 7.448

Editor in Chief

Scanned with OKEN Scanner

Ajasra UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2278-3741
www.ajasra.in
(Peer Reviewed Refereed UGC CARE Group 1 International Journal)

पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता का अध्ययन

(A Study of Contemporary Relevance of Educational Thoughts of Pt. Madan Mohan Malviya)

प्रो. बी.एल. जैन
शिक्षा विभागाध्यक्ष
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूँ

ऊषा शर्मा
शोधार्थी – शिक्षाविभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूँ

सार संक्षेप (Abstract) –किसी भी राष्ट्र एवं समाज की प्रगति एवं विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। वर्तमान में शिक्षा कैसी है तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा कैसी होनी चाहिए इन सन्दर्भों में महापुरुष, विद्वान, समाज सुधारक एवं राजनीतिज्ञ अपनी संस्कृति के अनुरूप शिक्षा संरचना का मार्गदर्शन करते हैं। प्राचीन काल से ही गुरु, ऋषि, मुनि कालान्तर में वाल्मीकि, व्यास, चाणक्य तथा आधुनिक काल में दयानन्द, अरविन्द, टैगोर, गाँधी, ज्योतिबा फुले, मदन मोहन मालवीय, बाबा साहब अम्बेडकर, डॉ. जाकिर हुसैन आदि के शैक्षिक विचारों ने भारतीय शिक्षा को प्रभावित किया है। इनकी शैक्षिक विचारधाराओं पर शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई है। इन शैक्षिक चिन्तकों में मालवीय जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने शैक्षिक विचारों के आधार पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय की बनारस में स्थापना की। उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान में व भावी सन्दर्भ में प्रासंगिकता जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन सम्पन्न हुआ है। उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की राय में वर्तमान भारत मे मालवीय जी के शैक्षिक विचार अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

प्रमुख शब्द –शैक्षिक विचार, समसामयिक, प्रासंगिकता, आयोग एवं नीतियाँ, शैक्षिक घटक, मानव निर्माण, व्यक्तित्व, सुसंस्कृत, भूमण्डलीकरण एवं उपकरण।

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावना –शिक्षा और धर्म का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सुसंस्कृत बनाना है, जबकि धर्म जीवन में 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' को समाहित करके मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाता है। जिससे मनुष्य में उन्नत विचारा, उद्दात्त भावों एवं श्रेष्ठ मानवीय रूचियों का विकास होता है। प्राचीन भारतीय विचारधारा के अन्तर्गत यह माना जाता रहा है कि जब किसी भी समाज व देश की सभ्यता एवं संस्कृति का पतन होने लगता है, तब ईश्वर महापुरुषों के रूप में जन्म लेकर धर्म और मानवता की रक्षा करता है। प्राचीनकला से ही भारत भूमि में ऐसे महापुरुषों का जन्म होता रहा है, जिन्होंने इसकी सांस्कृतिक निधि में अपना योगदान देकर मानवता की रक्षा की है। ऐसे महापुरुष अपने लिए नहीं जीते, बल्कि वे अपने देश और समाज के लिए अपना बलिदान कर देते हैं। इन महापुरुषों की श्रृंखला में पं. मदन मोहन मालवीय प्रमुख है, जिन्होंने समाज, धर्म, देश व विश्व के लिए महान कार्य करके समाज को सुधारने तथा भारतीय शिक्षा के स्वरूप की संरचना में महत्वूपर्ण योगदान किया।

पं. मदन मोहन मालवीय न केवल राष्ट्रभक्त थे, बल्कि वे महान समाज सुधारक एवं शिक्षाशास्त्री थे। शिक्षा के रूप में उनके द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस प्रत्यक्ष उदाहरण है। उनके शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इसी विषय को शोधकर्त्री ने अपने शोध का आधार बनाया है।

समस्या कथन – पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता : एक अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–समस्या में प्रयुक्त शब्दों के मूल्य और उसकी व्यावहारिकता को स्पष्ट करता है।

Scanned with OKEN Scanner

उपरोक्त समस्या में मुख्य रूप से तीन घटक हैं–

1. शैक्षिक विचार
2. समसामयिक
3. प्रासंगिता

- शैक्षिक विचारों से तात्पर्य विभिन्न शैक्षिक पक्षों यथा– शिक्षा दर्शन, शिक्षा से अभिप्राय, शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा का कार्य, शिक्षा का आधार, शिक्षक, शिक्षार्थी, विद्यालय एवं उसका वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं अनुशासन से है।
- समसामयिकता से अभिप्राय स्वातंत्रोत्तर भारत का आधुनिक काल। प्रमुखतः 2010 के पश्चात् का समय।
- प्रासंगिकता से अभिप्राय समाज द्वारा स्वीकार्यता है।
- तीनों घटकों का सामान्य अर्थ पं. मदन मोहन मालवीय के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की 2010 के बाद अर्थात् वर्तमान भारतीय सामाजिक व्यवस्था द्वारा स्वीकार्यता है।

अध्ययन का औचित्य– शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जाता है तथा शिक्षण एक ऐसा कार्य है जिसका सीधा संबंध अधिगम से होता है।

- शिक्षा को शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए सुव्यवस्थित प्रयास करने पड़ते ह। एतदर्थ समाज शिक्षा के उद्देश्य तथा लक्ष्य निर्धारित करता है।
- वर्तमान में विश्वस्तर पर भूमण्डलीकरण तथा अनेक अन्य कारणों से समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इन समस्याओं का समाधान शिक्षा से ही सम्भव है। किसी राष्ट्र की प्रगति तथा भविष्य भी शिक्षा पर ही निर्भर करता है। इसके लिए नीतियाँ बनती हैं, आयोग बिठाए जाते है। आंग्लकाल में हर्टाग समिति, हंटर कमीशन तथा मैकाले की शिक्षा नीति ने उस समय की शिक्षा को प्रभावित किया।

Scanned with OKEN Scanner

स्वतंत्रता के बाद भी भारत में शिक्षा सुधार के लिए कई आयोग व नीतियाँ बनाइयी गयीं। इन नीतियों व आयोगों के साथ विद्वान, समाज सुधारक व शिक्षा शास्त्री भी शिक्षा के स्वरूप निर्धारण में महती भूमिका निभाते रहे हैं। अनेक शिक्षाविदों यथा गाँधी, दयानन्द, टैगोर, अरविन्द, ज्योति बा फुले, सर सैयद अहमद खाँ, मालवीय जी तथा डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों पर भारत में शिक्षा संस्थान भी स्थापित हुए है। समसामयिक सन्दर्भ में भारतीय शिक्षा की समीक्षा करें तो ज्ञात होता है कि शिक्षा केवल, जीविकोपार्जन के लिए तैयार करने तथा पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित हो गई है। मूल्य विकास, मानव निर्माण तथा आध्यात्मिक गुण विकसित करना गौण सा हो गया है। यद्यपि भारत अन्य देशो की तरह विकास की ओर अग्रसर है, परन्तु वह भी दूसरे देशों की तरह भौतिक व तकनीकी विकास में ही प्रगति कर रहा है। चिरन्तन मूल्य, प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिकता एवं समृद्ध ज्ञान परम्परा भारत के प्राण हैं। भारत के भविष्य की दृष्टि से वर्तमान शिक्षा में इन्हें स्थान दिया जाए या नहीं, स्थान मिले तो कैसे सम्भव है। यह राष्ट्रीय नेतृत्व, शिक्षाविदों तथा महापुरुषों के चिन्तन का विषय है। निःसन्देह शिक्षाविद् व महापुरुष ही शिक्षा के आदर्श स्वरूप का मार्गदर्शन कर सकते है।

हमारे देश में शिक्षा का जो स्तर गिर रहा है, उसका मुख्य कारण शिक्षा का अपने उद्देश्यों से विचलित हो जाना है। इसके लिए शिक्षा की श्रेष्ठ नीतियाँ बनानी होंगी। इसके अलावा महापुरुषों एवं शिक्षाशास्त्रियों की शक्षिक विचारधाराओं को अपनाना होगा।

शिक्षा मनीषियों ने ही समय–समय पर शिक्षा के दुर्गम एवं दुरूह पथ को प्रशस्त करके उसकी रूपरेखा को आसान बनाकर बहुमूल्य धरोहर के रूप में अपने विचारों समाज को से अलंकृत किया है। इन शिक्षा मनीषियों म मालवीय जी का नाम अग्रगण्य है। शिक्षा द्वारा ये एक चरित्रवान, स्वस्थ, आत्मनिर्भर, देशभक्त, भविष्य दृष्टा तथा उत्तम नागरिक का निर्माण करना चाहते थे। क्या समसामयिक सन्दर्भ में भारत के वर्तमान व भविष्य की दृष्टि

Scanned with OKEN Scanner

से उनके शैक्षिक विचार प्रासंगिक हैं, इस पर अध्ययन किए जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

उद्देश्य –

1. मालवीय जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पं. मदन मोहन मालवीय के शक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

संकल्पनात्मक प्राक्कल्पना –पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार समसामयिक संदर्भ में प्रासंगिक हैं।

संक्रियात्मक प्राक्कल्पना–

1. उच्च माध्यमिक स्तरीय अध्यापकों की राय में पं. मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचार समसामयिक सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं।
2. उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की राय में पं. मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचार समसामयिक सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है।

समय सीमा को ध्यान में रखकर इन दो प्राक्कल्पनाओं का छात्र–छात्रा, शहरी–ग्रामीण विद्यार्थी, पुरुष–महिला शिक्षक, शहरी–ग्रामीण शिक्षक तथा छात्र–शिक्षक के लिए पाँच उपप्राक्कल्पनाएँ बनाकर प्रतिशत के आधार पर जाँच की गयी है।

परिसीमन –

1. पं. मदन मोहन मालवीय के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं योगदान को देखते हुए उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन।
2. पं. मालवीय के शैक्षिक विचारों की शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से प्रासंगिकता की जानकारी।

Scanned with OKEN Scanner

अनुसंधान विधि –प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण एवं विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त चर –

1. स्वतंत्र चर –पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार।
2. आश्रित चर –पं. मदन मोहन मालवीय के विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता।

न्यादर्श –प्रस्तुत शोध अध्ययन में पं. मदन मोहन मालवीय के सम्बन्ध में प्राप्त सभी पुस्तकों, पत्रिका, आलेखों एवं दस्तावेजों को न्यादर्श के रूप में स्वीकार कर उनके शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता जानने के लिए दो उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों का यादृच्छिक विधि से चयन कर 20 अध्यापकों तथा 30 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

उपकरण –शोधकर्त्री द्वारा शिक्षा के 8 आयामों अर्थात् मालवीय जी के अनुसार शिक्षा के अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक, शिक्षार्थी, विद्यालय, स्त्री शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता से सम्बन्धित 5–5 प्रश्नों अर्थात् 40 प्रश्नों की एक प्रश्नावली शैक्षिक विचारों की शिक्षकों तथा विद्यार्थियों से समसामयिक प्रासंगिकता जानने के लिए उपकरण के रूप में बनायी गयी।

प्रयुक्त सांख्यिकी – शोधकर्त्री ने शोध अध्ययन के निष्कर्ष निष्पादन एवं व्याख्या हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया है।

विश्लेषण विधि – निष्कर्ष निष्पादन के लिए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के न्यादर्श पर उक्त प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। प्राप्त उत्तरों के आधार पर प्रतिशत को प्रासंगिकता के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राप्त प्रतिशत यदि 80 प्रतिशत से अधिक स्वीकार्यता दर्शाता है तो प्राक्कल्पना को उच्च स्तरीय स्वीकार्य मानते हुए निष्कर्ष की व्याख्या की गयी है।

Scanned with OKEN Scanner

विश्लेषण एवं निष्कर्ष – शोधकर्त्री द्वारा इस अध्ययन के लिए बनाए गए उपकरण (प्रश्नावली) स प्राप्त आँकड़ों एवं प्रतिशत को सारणी सं. 1 में दर्शाया गया है।

सारणी सं. 1

उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षक एवं विद्यार्थियों की राय में मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिता सम्बन्धी प्रतिशत सारणी

समूह	क्र. सं.	वर्ग	न्यादर्श	अधिकतम सम्भावित प्राप्तांक	वास्तविक प्राप्तांक	प्रतिशत	परिणाम
शिक्षक	1	पुरुष शिक्षक	10	400	349	87.25	5 प्रतिशत से कम अन्तर के कारण प्राक्कल्पना स्वीकृत
	2	महिला शिक्षक	10	400	342	85.50	
शिक्षक	1	शहरी शिक्षक	10	400	355	88.75	5 प्रतिशत से कम अन्तर के कारण प्राक्कल्पना स्वीकृत
	2	ग्रामीण शिक्षक	10	400	336	84.00	
विद्यार्थी	1	लड़के	15	600	496	82.66	5 प्रतिशत से कम अन्तर के कारण प्राक्कल्पना स्वीकृत
	2	लड़कियाँ	15	600	523	87.16	
विद्यार्थी	1	शहरी विद्यार्थी	15	600	501	83.50	5 प्रतिशत से कम अन्तर के कारण प्राक्कल्पना स्वीकृत
	2	ग्रामीण विद्यार्थी	15	600	518	86.33	
शिक्षक एवं विद्यार्थी	1	शिक्षक	20	800	691	86.38	5 प्रतिशत से कम अन्तर के कारण प्राक्कल्पना स्वीकृत
	2	विद्यार्थी	30	1200	1019	84.92	

उक्त संक्रियात्मक प्राक्कल्पनाओं से सम्बन्धित आंकड़ों एवं प्रतिशत के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता के प्रति उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की राय का सकारात्मक प्राप्त प्रतिशत 80 प्रतिशत से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः हम कह सकते है कि वर्तमान शिक्षा में मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता उच्च स्तरीय है।

Scanned with OKEN Scanner

पुरुष एवं महिला शिक्षको का प्रतिशत क्रमशः 87.25 तथा 85.50, शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों का प्रतिशत क्रमशः 88.75 तथा 84.00 प्रतिशत। इसी प्रकार बालक एवं बालिकाओं का प्राप्त प्रतिशत 82.66 तथा 87.16, शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत क्रमशः 83.50 तथा 86.33 प्रतिशत तथा उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के मध्य प्राप्त प्रतिशत क्रमशः 86.38 तथा 84.92 है। इन पाँचों प्राक्कल्पनाओं के समूहों के प्राप्त प्रतिशत का अन्तर 5 प्रतिशत से अधिक नहीं है। अतः प्राप्त आंकड़ों एवं प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि समसामयिक सन्दर्भ में उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की राय में मालवीय जी के शैक्षिक विचार अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा में मालवीय जी के शैक्षिक विचारों को उच्च वरीयता दी जानी चाहिए।

शैक्षिक फलितार्थ–

प्रश्नावली में शिक्षा के आठ सन्दर्भों पर पाँच–पाँच प्रश्न निर्मित किए गए थे, अतः प्राप्त उच्च स्तरीय सकारात्मक प्रतिशत यह दर्शाता है कि शिक्षा क अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक, शिक्षार्थी, विद्यालय, स्त्री शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता सम्बन्धी मालवीय जी के विचार समसामयिक सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है। प्रश्नों पर प्राप्त विश्लेषण यह भी दर्शाता ह कि शिक्षा का अर्थ मनुष्य की अन्तर्निहित शक्ति का विकास, शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास, पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति तथा आधुनिक विज्ञान विषयों का निर्धारण, शिक्षक तथा बालक को आत्मनिर्भर बनाने को स्थान दिया जाना चाहिए। विश्व मैत्री, स्त्री शिक्षा का विकास, राष्ट्रभक्ति, सुस्वास्थ्य एवं सामाजिक समरसता विकसित करना शिक्षा का लक्ष्य रखा जाना अपेक्षित है।

उपसंहार–प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख निष्कष है कि यदि भारत को श्रेष्ठ, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आत्मनिर्भर, राष्ट्रभक्त एवं वैज्ञानिक रूप से उन्नत एवं सुदृढ़

Scanned with OKEN Scanner

बनाना है तो मालवीय जी के शैक्षिक विचारों को आज की शिक्षा में समाहित किया जाना चाहिए। उनके शैक्षिक विचार समसामयिक सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. उपाध्याय, रामजी (1965) : प्राचीन साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, वाराणसी, भारत सांस्कृतिक संस्थानम्।
2. गुप्त, एस.पी. (2000) : अनुसंधान सन्दर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. प्रज्ञा, बी.एच. यू. जर्नल (2018) : मालवीय शती विशेषांक, वाराणसी, नागरी, प्रचारिणी सभा।
4. पाण्डेय, रामशकल (2008) : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. मिश्र, लोकमान्य (2007) : भारतीय शिक्षा शास्त्रिणः, लखनऊ, मृगाक्षो प्रकाशन।
6. वर्मा, बैजनाथ प्रसाद (1972) : विश्व के महान शिक्षा शास्त्री, पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
7. शर्मा, आर.ए. (1985) : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, मेरठ, लायल बुकडिपो।
8. स्मारिका, विशेषांक (दिसम्बर, 1985) : महामनामालवीय मिशन, लखनऊ, काशीहिन्द विश्वविद्यालय।

Scanned with OKEN Scanner